IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, December 2024

आधुनिक परिपेक्ष मैं स्वामी विवेकानंदजी के शेक्षिक विचारो का समीक्षात्मक अध्य्यन

Manali Sahu and Dr. Pallavi Nagar
M.ED Student, DAVV University, Indore, MP India
Professor, Arihant College Indore M.P, India

"जिस शिक्षा से हम अपना जीवन निर्माण कर सकें,
मनुष्य बन सकें, चरित्र गठन कर सके और
विचारों का सामंजस्य कर सकें
वहीं वास्तव में शिक्षा कहलाने योग्य है।"

…….स्वामी विवेकानंद

प्रस्तावना

भारत एक युवा राष्ट्र है। समय के साथ-साथ भारत की शिक्षा प्रणाली में भी परिवर्तन होते रहे हैं। उस समय भारत भी अनेको रियासतों में बटा हुआ था। जिसके कारण भारत में जिसकी भी सत्ता होती वह शासन व्यवस्था और शिक्षा प्रणाली को अपने नियमों के अनुसार चलाता। भारत में जब मुगलों का शासन का अंत हुआ उसके बाद सन 1830 में ब्रिटिश लोगों ने भारत को अपने अधीन बना लिया और करीब 117 वर्षों तक भारत पर शासन किया। ब्रिटिश काल में भी भारत की शिक्षा प्रणाली में बहुत बदलाव आए। लॉर्ड मैकाले को आधुनिक शिक्षा का जनक माना जाता है। स्वामी विवेकानन्द भारतवर्ष के अमर सपूतों में से एक हैं। उनकी आध्यात्मिकता की गहराई तथा सम्पूर्ण मानवमात्र के प्रति उनका प्रेम हमारे देश की धरोहर है। शिक्षा के क्षेत्र में भी उनके विचारों में उनकी मानवता के प्रति प्रेम तथा आध्यात्म की भावनायें दृष्टिगोचर होती हैं। इनका व्यावहारिक रूप रामकृष्ण मिशन के जन कल्याणकारी कार्यों में देखा जा सकता है। स्वामी जी अपने

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, December 2024

देशवासियों की अज्ञानता और निर्धनता, इन दो से बहुत चिन्तित थे और इन्हें दूर करने के लिए इन्होंने शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया था। भारतीय शिक्षा को भारतीय स्वरूप प्रदान करने के लिए ये सदैव स्मरण किये जायेंगे। स्वामी जी के विचार से मनुष्य को आत्मज्ञान तभी होता है जब उसे भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार का ज्ञान हो । स्वामी जी ने भौतिक ज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रत्यक्ष अनुकरण, व्याख्यान, निर्देशन, विचार-विमर्श और प्रयोग विधियों का समर्थन किया है और आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति के लिए स्वाध्याय, मनन, ध्यान और योग की विधियों का समर्थन किया है। इन्होंने अपने अनुभव के आधार पर यह बात बहुत बलपूर्वक कही कि भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त करने की सर्वोत्तम विधि योग विधि (एकाग्रता) है। स्वामी जी स्वयं शिक्षक थे। इन्होंने देश-विदेश में लोगों को वेदान्त की शिक्षा दी थी और उन्हें ध्यान क्रिया में प्रशिक्षित किया था। पर इन्होंने उपरोक्त सभी विधियों को कुछ अपने विशिष्ट रूप में प्रयोग किया था। अतः यहाँ इनके इस विशिष्ट रूप को समझना आवश्यक है। स्वामी विवेकानन्द जी ने मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णतः की अभिव्यक्ति को शिक्षा माना है। स्वामी जी के अनुसार, शिक्षा जीवन संघर्ष की तैयारी है क्योंकि जो शिक्षा जीवन जीने की कला नहीं सिखाती जीवन को सम-विषय परिस्थितियों में अनुकूल आचरण करना नहीं सिखती वह शिक्षा व्यर्थ है।

1. स्वामी विवेकानन्द के अनुसार, अध्यापक का चरित्र अत्यन्त उच्च कोटि का होना चाहिए।
2. स्वामी विवेकानन्द के अनुसार, अध्यापक को विषय का ज्ञाता तो होना ही चाहिए साथ ही उसके अन्दर प्रेम, सहानुभूति, त्याग, निष्पक्षता की भावना का होना आवश्यक है।
3. विद्यार्थियों के सम्बन्ध में स्वामी विवेकानन्द का विचार था कि अपने आपको पहचानो ज्ञान तो आपके अन्दर है उसे बाहर निकालो अपनी अन्तरात्मा को चेतन करो बिना इस सबकी बाह्य शिक्षण व्यर्थ है।
4. स्वामी विवेकानन्द ने परोपकार तथा समाज सेवा को सर्वोपरि मानते हुए कहा है कि नर सेवा ही नारायण सेवा है।
5. स्वामी विवेकानन्द ने दमनात्मक अनुशासन का विरोध करके प्रभावात्मक अनुशासन पर बल दिया है।
6. स्वामी विवेकानन्द ने आध्यात्मिक उन्नति के साथ ही लौकिक समृद्धि को भी आवश्यक माना है। यही कारण है कि उन्होंने पाठ्यक्रम में आध्यात्मिक विषयों के साथ-साथ लौकिक विषयों को भी समावेशित किया है।
7. स्वामी विवेकानन्द ने मन की एकाग्रता पर विशेष जोर दिया है क्योंकि मन को एकाग्र किए बिना किसी भी शिक्षण विधि का प्रभाव स्वतः न्यून होता जाता है। यद्यपि उन्होंने अनुकरण विधि, विचार-विमर्श, उपदेश, परामर्थ वैयक्तिक निर्देशन विधियों को भी शिक्षण विधि के रूप में बताया है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, December 2024

स्वामी विवेकानन्द ने स्त्री को पुरुषों के समान स्थान देते हुए कहा है कि जिस देश में स्त्रियों का सम्मान व आदर नहीं होता वह देश कभी भी प्रगति नहीं कर सकता। स्त्रियों के उत्थान के सम्बन्ध में स्वामी जी ने कहा था कि- "पहले अपनी स्त्रियों को शिक्षित करो तब वे बताएँगी कि उनके लिए कौन-कौन से सुधार करने आवश्यक हैं।

जीवन परिचय

जन्म: 12 जनवरी 1863 कलकत्ता के एक कुलीन बंगाली कायस्थ परिवार में जन्मे विवेकानन्द आध्यात्मिकता की ओर झुके हुए थे। उनका वास्तविक नाम नरेन्द्र नाथ दत्त था। वे अपने गुरु रामकृष्ण देव से काफी प्रभावित थे जिनसे उन्होंने सीखा कि सारे जीवों मे स्वयं परमात्मा का ही अस्तित्व हैं; इसलिए मानव जाति अथेअथ जो मनुष्य दूसरे जरूरतमन्दो की मदद करता है या सेवा द्वारा परमात्मा की भी सेवा की जा सकती है। रामकृष्ण की मृत्यु के बाद विवेकानन्द ने बड़े पैमाने पर भारतीय उपमहाद्वीप की यात्रा की और ब्रिटिश भारत में तत्कालीन स्थितियों का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त किया। बाद में विश्व धर्म संसद 1893 में भारत का प्रतिनिधित्व करने, संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए प्रस्थान किया। विवेकानन्द ने संयुक्त राज्य अमेरिका, इंग्लैंड और यूरोप में हिंदू दर्शन के सिद्धान्तों का प्रसार किया और कई सार्वजनिक और निजी व्याख्यानों का आयोजन किया। सन् 1871 में, आठ साल की उम्र में, नरेन्द्रनाथ ने ईश्वर चंद्र विद्यासागर के मेट्रोपोलिटन संस्थान में दाखिला लिया जहाँ वे स्कूल गए।1877 में उनका परिवार रायपुर चला गया। 1879 में, कलकत्ता में अपने परिवार की वापसी के बाद, वह एकमात्र छात्र थे जिन्होंने प्रेसीडेंसी कॉलेज प्रवेश परीक्षा में प्रथम डिवीजन अंक प्राप्त किये।वे दर्शन, धर्म, इतिहास, सामाजिक विज्ञान, कला और साहित्य सहित विषयों के एक उत्साही पाठक थे। इनकी वेद, उपनिषद, भगवद् गीता, रामायण, महाभारत और पुराणों के अतिरिक्त अनेक हिन्दू शास्त्रों में गहन रूचि थी। नरेंद्र को भारतीय शास्त्रीय संगीत में प्रशिक्षित किया गया था, और ये नियमित रूप से शारीरिक व्यायाम में व खेलों में भाग लिया करते थे। नरेंद्र ने पश्चिमी तर्क, पश्चिमी दर्शन और यूरोपीय इतिहास का अध्ययन जनरल असेम्बली इंस्टिट्यूशन (अब स्कॉटिश चर्च कॉलेज) में किया। 1881 में इन्होंने ललित कला की परीक्षा उत्तीर्ण की, और 1884 में कला स्नातक की डिग्री पूरी कर ली।

1) शिक्षा दर्शन (Educational Philosophy)

(1) स्वामी विवेकानन्द मैकॉले द्वारा प्रचारित तत्कालीन अंग्रेजी शिक्षा पद्धति को सही नहीं मानते थे क्योंकि इस शिक्षा का उद्देश्य मात्र बाबुओं की संख्या बढ़ाना था।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, December 2024

(2) स्वामी जी भारत में ऐसी शिक्षा चाहते थे जिससे व्यक्ति चरित्रवान बने, साथ में आत्म-निर्भर भी बने। उन्हीं के शब्दों में, "हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है, जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है, मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती है, बुद्धि का विकास होता है और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है।"

(3) स्वामी जी सैद्धान्तिक शिक्षा की तुलना में व्यावहारिक शिक्षा पर बल देते थे। उन्हीं के शब्दों में, "तुमको कार्य के सब क्षेत्रों में व्यावहारिक बनना पड़ेगा। सिद्धान्तों के ढेरों में सम्पूर्ण देश का विनाश कर दिया है।'

शिक्षा-विकास

1. शिक्षा ऐसी हो जिससे व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक और आत्मिक विकास हो सके।
2. शिक्षा ऐसी हो जिससे चरित्र का गठन हो, मन का बल बढ़े, बुद्धि का विकास हो तथा व्यक्ति आत्म निर्भर बने ।
3. बालकों के समान ही बालिकाओं को भी शिक्षा दी जानी चाहिये।
4. धार्मिक शिक्षा, पुस्तकों से नहीं वरन् व्यवहार, आचरण एवं संस्कारों के माध्यम से दी जानी चाहिए।
5. पाठ्यक्रम में सांसारिक एवं आध्यात्मिक, दोनों प्रकार के विषय रखे जाने चाहिये।
6. शिक्षा गुरुगृह में ही प्राप्त की जा सकती है।
7. शिक्षक तथा छात्र में आदर तथा गरिमामय सम्बन्ध होने चाहिए।
8. सभी को शिक्षित करने का प्रयास करना चाहिए।
9. नारी शिक्षा का केन्द्र धर्म होना चाहिए।
10. देश की औद्योगिक प्रगति के लिये प्राविधिक शिक्षा का विस्तार करना चाहिए।

शिक्षा का अर्थ

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार, शिक्षा का अर्थ मनुष्य में छिपी हुई सभी शक्तियों का पूर्ण विकास है, न कि केवल सूचनाओं का संग्रह है। उनके अनुसार, "यदि शिक्षा का अर्थ सूचनाओं से होता, तो पुस्तकालय संसार के सर्वश्रेष्ठ संत होते तथा विश्वकोष ऋषि बन जाते।" उनके अनुसार, ' "शिक्षा उस सन्निहित पूर्णता का प्रकाश है, जो मनुष्य में पहले से ही विद्यमान है। "

स्वामी जी शिक्षा के द्वारा मनुष्य को लौकिक एवं पारलौकिक दोनों जीवनों के लिए तैयार करना चाहते थे। इनका विश्वास था कि जब तक हम भौतिक दृष्टि से सम्पन्न एवं सुखी नहीं होते तब तक ज्ञान, कर्म, भक्ति और योग, ये सब कल्पना की वस्तु है। लौकिक दृष्टि से इन्होंने नारा दिया- 'हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जिसके द्वारा चरित्र का गठन हो, मन का बल बढ़े, बुद्धि का विकास हो और मनुष्य स्वावलम्बी बनें। परन्तु मनुष्य

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, December 2024

जीवन का अन्तिम उद्देश्य ये अपने अन्दर छिपी आत्मा (पूर्णता) की अनुभूति ही मानते थे। पारलौकिक दृष्टि से इन्होंने उद्घोषणा की- 'शिक्षा मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता की अभि

भौतिक एवं आध्यात्मिक सत्य

स्वामी विवेकानन्द मनुष्य के भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों रूपों को वास्तविक मानते थे, सत्य मानते थे। इसलिए मनुष्य के दोनों पक्षों के विकास पर बल देते थे। स्वामी जी ने शिक्षा के जिन उद्देश्यों पर बल दिया है उन्हें हम निम्नलिखित रूप में क्रमबद्ध कर सकते हैं-

1. शारीरिक विकास- स्वामी जी भौतिक जीवन की रक्षा एवं उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति और आत्मानुभूति दोनों के लिए स्वस्थ शरीर की आवश्यकता समझते थे। भौतिक दृष्टि से इन्होंने कहा कि इस समय हमें ऐसे बलिष्ट आत्मानुभूति के लिए इन्होंने ज्ञान योग, कर्म योग, भक्ति योग अथवा राज योग को आवश्यक बताया और इनमें से किसी भी प्रकार के योग साधन के लिए स्वस्थ शरीर की आवश्यकता स्पष्ट की। इनकी दृष्टि से शिक्षा द्वारा सर्वप्रथम मनुष्य का शारीरिक विकास ही किया जाना चाहिए।

2. मानसिक एवं बौद्धिक विकास- स्वामी जी ने भारत के पिछड़ेपन का सबसे बड़ा कारण उसके बौद्धिक पिछड़ेपन को बताया और इस बात पर बल दिया है कि हमें अपने बच्चों का मानसिक एवं बौद्धिक विकास करना चाहिए और इसके लिए उन्हें आधुनिक संसार के ज्ञान-विज्ञान से परिचित कराना चाहिए, जहाँ से जो भी अच्छा ज्ञान एवं कौशल मिले उसे प्राप्त कराना चाहिए और उन्हें संसार में आत्मविश्वास के साथ खड़े होने की सामर्थ्य प्रदान करनी चाहिए।

3. समाज सेवा की भावना का विकास- स्वामी जी ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि पढ़-लिखने का अर्थ यह नहीं कि अपना ही भला किया जाए, मनुष्य को पढ़-लिखने के बाद मनुष्य मात्र की भलाई करनी चाहिए। इन्होंने भारत की जनता की दरिद्रता को स्वयं अपनी आँखों से देखा था। ये चाहते थे कि पढ़े-लिखे और सम्पन्न लोग दीन-हीनों की सेवा करें, उन्हें ऊँचा उठाने के लिए प्रयत्न करें, समाज सेवा करें। समाज सेवा से इनका तात्पर्य दया या दान से नहीं था, समाज सेवा से इनका तात्पर्य दीन-हीनों के उत्थान में सहयोग करने से था, उठेंगे तो वे स्वयं ही। ये शिक्षा द्वारा ऐसे समाज सेवियों की टीम तैयार करना चाहते थे। ये आध्यात्मिक दृष्टि से भी समाज सेवा को बहुत महत्व देते थे। ये मनुष्य को ईश्वर का मन्दिर मानते थे और उसकी सेवा को ईश्वर की सेवा मानते थे।

4. नैतिक एवं चारित्रिक विकास- स्वामी जी ने यह बात अनुभव की कि शरीर से स्वस्थ, बुद्धि से विकसित और अर्थ से सम्पन्न होने के साथ-साथ मनुष्य को चरित्रवान भी होना चाहिए। चरित्र ही मनुष्य को सत्यनिष्ठ बनाता है, कर्तव्यनिष्ठ बनाता है। इसलिए इन्होंने शिक्षा द्वारा मनुष्य के नैतिक एवं चारित्रिक विकास पर भी

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, December 2024

बल दिया। नैतिकता से इनका तात्पर्य सामाजिक नैतिकता और धार्मिक नैतिकता दोनों से था और चारित्रिक विकास से तात्पर्य ऐसे आत्मबल के विकास से था जो मनुष्य को सत्य मार्ग पर चलने में सहायक हो और उसे असत्य मार्ग पर चलने से रोके। इनका विश्वास था कि ऐसे नैतिक एवं चरित्रवान मनुष्यों से ही कोई समाज अथवा राष्ट्र आगे बढ़ सकता है, ऊँचा उठ सकता है।

5. व्यावसायिक विकास- स्वामी जी ने भारत की दरिद्र जनता को बड़े निकट से देखा था, उनके शरीर से झाँकती हुई हड्डियों को रोटी, पड़े और मकान की मांग करते हुए देखा था। साथ ही इन्होंने पाश्चात्य देशों के वैभवशाली जीवन को भी देखा था और इस निष्कर्ष पर पहुँचे थे कि उन देशों ने यह भौतिक सम्पन्नता ज्ञान-विज्ञान और तकनीकी के विकास और प्रयोग से प्राप्त की है। अतः इन्होंने उद्घोष किया कि कोरे आध्यात्मिक सिद्धान्तों से जीवन नहीं चल सकता, हमें कर्म के हर क्षेत्र में आगे आना चाहिए। इसके लिए इन्होंने शिक्षा द्वारा मनुष्यों को उत्पादन एवं उद्योग कार्यों तथा अन्य व्यवसायों में प्रशिक्षित करने पर बल दिया।

6. राष्ट्रीय एकता एवं विश्वबन्धुत्व का विकास- स्वामी जी के समय हमारा देश अंग्रेजों के अधीन था, हम परतन्त्र थे। स्वामी जी ने अनुभव किया कि परतन्त्रता हीनता को जन्म देती है और हीनता हमारे सारे दुःखों का सबसे बड़ा कारण है। अतः जब ये अमरीका से भारत लौटे तो इन्होंने भारत की भूमि पर पैर रखते ही युवकों का आह्वान किया- 'तुम्हारा सबसे पहला कार्य देश को स्वतन्त्र कराना होना चाहिए और इसके लिए जो भी बलिदान करना पड़े, उसके लिए तैयार होना चाहिए। इन्होंने उस समय ऐसी शिक्षा की व्यवस्था की आवश्यकता पर बल दिया जो देशवासियों में राष्ट्रीय चेतना जागृत करे, उन्हें संगठित होकर देश की स्वतन्त्रता के लिए संघर्षरत करे। परन्तु ये संकीर्ण राष्ट्रीयता के हामी नहीं थे। ये तो सब मनुष्यों में उस परमात्मा के दर्शन करते थे और इस दृष्टि से विश्वबन्धुत्व में विश्वास करते थे।

7. धार्मिक शिक्षा एवं आध्यात्मिक विकास- स्वामी जी शिक्षा द्वारा मनुष्य के भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों पक्षों के विकास पर समान बल देते थे। इनका स्पष्ट मत था कि मनुष्य का भौतिक विकास आध्यात्मिकता की पृष्ठभूमि में होना चाहिए और उसका आध्यात्मिक विकास भौतिक विकास के आधार पर होना चाहिए और ऐसा तभी सम्भव है जब मनुष्य धर्म का पालन करे। धर्म को स्वामी जी उसके व्यापक रूप में लेते थे। इनकी दृष्टि से धर्म वह है जो हमें प्रेम सिखाता है और द्वेष से बचाता है, हमें मानवमात्र की सेवा में प्रवृत्त करता है और मानव के शोषण से बचाता है और हमारे भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार के विकास में सहायक होता है। स्वामी जी मनुष्य को प्रारम्भ से ही ऐसे धर्म की शिक्षा देने पर बल देते थे। इनकी दृष्टि से ये सब गुण हमारे

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, December 2024

अद्वैत वेदान्त धर्म में है, यह संसार में एकत्व भाव की अनुभूति कराता है और सबसे प्रेम करना सिखाता है। यह सार्वभौमिक धर्म है। इनकी दृष्टि से संसार के अन्य धर्म की कुछ ऐसी ही शिक्षाएँ देते हैं पर उन सबमें हमारा भारतीय वेदान्त धर्म सर्वश्रेष्ठ है । अतः हमें प्रारम्भ से ही उसकी शिक्षा देनी चाहिए। साथ ही बच्चों को जीवन के अन्तिम उद्देश्य मुक्ति की प्राप्ति के लिए प्रारम्भ से ही ज्ञान योग, कर्म योग, भक्ति योग अथवा राज योग की ओर उन्मुख करना चाहिए। इनकी दृष्टि से वास्तविक शिक्षा वही है जो मनुष्य को भौतिक जीवन जीने के लिए और आध्यात्मिक मुक्ति प्राप्त करने के लिए तैयार करती हैं।

व्यक्ति है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

थीसिस का शीर्षक	स्वामी विवेकानन्द की स्त्री शिक्षा, युवा शिक्षा एवं जन शिक्षा का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन
शोधकर्ता का नाम	सजवान, दीप्ति
गाइड का नाम	राज, अनोज
पूर्ण वर्ष	2017
विभाग का नाम	शिक्षा विभाग
विश्वविद्यालय का नाम	हिमगिरी ज़ी यूनिवर्सिटी का

थीसिस का शीर्षक	स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक दर्शन का वर्तमान परिपेक्ष्य में बिशेष्नातमक अध्ययन
शोधकर्ता का नाम	अमित बाजपेयी
गाइड का नाम	रश्मी शुक्ला
पूर्ण वर्ष	2022
विभाग का नाम	प्रबंधन विभाग
विश्वविद्यालय का नाम	साई नाथ विश्वविद्यालय

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, December 2024

थीसिस का शीर्षक	आधुनिक भारतीय शिक्षा में रवीन्द्रनाथ टैगोर एवं स्वामी विवेकानन्द के शैक्षणिक दर्शन की प्रस्तुति एक अध्ययन
शोधकर्ता का नाम	त्रिपुरा झा
गाइड का नाम	अजीजुर रहमान खान
पूर्ण वर्ष	2020
विभाग का नाम	आर्ट्स एक
विश्वविद्यालय का नाम	बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय का

थीसिस का शीर्षक	वर्तमान परिपेरेच मी स्वामी विवेकानन्द एवम एनीबेसेंट के जीवन मुल्यो ओर सैक्षिक विचारो का एक तुलनातमक अध्ययन
शोधकर्ता का नाम	सिंह संतोष कुमार
गाइड का नाम	पांडे गौरीशंकर
पूर्ण वर्ष	2012
विभाग का नाम	शिक्षा विभाग
विश्वविद्यालय का नाम	डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद

थीसिस का शीर्षक	स्वामी विवेकानन्द और जॉन डेवी के शैक्षिक दर्शन और वर्तमान शैक्षिक प्रणाली में उनकी प्रासंगिकता का एक तुलनात्मक अध्ययन
शोधकर्ता का नाम	मिश्रा, पीयूष
गाइड का नाम	शर्मा, जी.पी
पूर्ण वर्ष	2011
विभाग का नाम	शिक्षा विभाग

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, December 2024

विश्वविद्यालय का नाम	डॉ. बीआर अंबेडकर विश्वविद्यालय आगरा का

थीसिस का शीर्षक	आधुनिक भारतीय शिक्षा के सन्दर्भ में स्वामी दयानंद एवं स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक मूल्यों एवं दार्शनिक विचारों का आलोचनात्मक अध्ययन
शोधकर्ता का नाम	शर्मा, वेद प्रकाश
गाइड का नाम	मोदी, अशोक कुमार
पूर्ण वर्ष	2013
विभाग का नाम	शिक्षा विभाग
विश्वविद्यालय का नाम	महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय का

शीर्षक:	आज के समय में स्वामी विवेकानन्द के विचारों की प्रासंगिकता, मूल्य आधारित शैक्षिक प्रणाली और माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में इसकी प्रभावशीलता
शोधकर्ता:	केशवानी मीना जी.
मार्गदर्शक:	हिरपारा मधुभाई
कीवर्ड:	शिक्षा और शैक्षिक अनुसंधान सामाजिक विज्ञान सामाजिक विज्ञान सामान्य
विश्वविद्यालय:	सौराष्ट्र विश्वविद्यालय

सन्दर्भ सूची

1. तेजसानंद, स्वामी (1967)। स्वामी विवेकानन्द और उनका संदेश, रामकृष्णन मिशन, बेलूर मठ,

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, December 2024

2. स्वामी विवेकानन्द का जीवन उनके पूर्वी और पश्चिमी शिष्यों द्वारा, खंड II, अद्वैत आश्रम, कलकत्ता, 2000, पृष्ठ। 408 152 टॉयने, एम. (1983)।
3. स्वामी विवेकानन्द का धर्म दर्शन, एसवीसीएमवी। वालिया, किरण एड. (2008)।
4. शिक्षा के बारे में मेरा विचार - स्वामी विवेकानन्द, अद्वैत आश्रम, कोलकाता। विल्फ्रेड सी. स्मिथ (1980)।
5. स्वामी विवेकानन्द के संपूर्ण कार्य, खंड VI, पृ. 487. स्वामी विवेकानन्द का जीवन उनके पूर्वी और पश्चिमी शिष्यों द्वारा, अद्वैत आश्रम, मायावती, 1979, खंड। 1.
6. स्वामी विवेकानन्द का जीवन उनके पूर्वी और पश्चिमी शिष्यों द्वारा, खंड II, अद्वैत आश्रम, कलकत्ता, 2000
7. बनर्जी, ज्योतिप्रसाद, "स्वामी विवेकानन्द एक देशभक्त-संत, भारत के जागृतकर्ता और राष्ट्र-निर्माता के रूप में", एसवीसीएमवी, 1963। बनहट्टी, जी.एस. (1989)
8. बोस, ए.सी. (1963-64)। स्वामी विवेकानन्द: "पूर्व और पश्चिम के बीच एक पुल", एसवीसीसी
9. चंद्रा, एस. (1994). स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा का दृष्टिकोण, इन: रॉय, एस. एवं शिवरामकृष्णन, एम. (एड्स),